卐 Vipreet Pratyangira Mantra Sadhna Evam Siddhi 卐

卐 श्री विपरीत प्रत्यंगिरा मंत्र साधना एवं सिद्धि 卐

Sumit Girdharwal Ji

9540674788, 9410030994

sumitgirdharwal@yahoo.com

www.baglamukhi.net

www.yogeshwaranand.org



यदि शत्रु निरंतर आप पर अभिचारिक कर्म कर रहा हो, निरंतर किसी न किसी रूप में आपको आर्थिक, मानसिक, सामाजिक, शारिरिक क्षति पहुंचा रहा हो और आपके भविष्य को चौपट कर रहा हो, तब भद्रकाली के इस स्वरूप, अर्थात विपरीत प्रत्यंगिरा का आश्रय लेना सर्वोत्तम उपाय है। जिस दिन से साधक इस महाविधा का प्रयोग आरम्भ करता है, उसी दिन से ही भगवती भद्र काली उसकी सुरक्षा करने लगती हैं और शत्रु द्वारा किये गये अभिचाारिक कर्म दोगुने वेग से उसी पर लौटकर अपना प्रहार करते

हैं। इसके अतिरिक्त राजकीय बाधा, अरिष्ट ग्रह बाधा निवारण में तथा अपना खोया हुआ पद, आस्तित्व ओर गरिमा प्राप्ति में भी यह विद्या सर्वोत्तम मानी जाती है। साधक की आयु, यश तथा तेज की वृद्धि करने में भी यह विद्या बहुत उत्तम मानी जाती है।

ध्यान

खड्गं कपालं डमरू त्रिशूलं,
सम्बिभ्रती चन्द्रकला वतंसा।
पिंगोर्ध्व-केशो-असित- भीम-दंष्ट्रा,
भूयाद् विभूत्यै मम भद्रकाली।।

अर्थः- खडग, कपाल, डमरू तथा त्रिशूल धारण करने वाली देवी भद्र काली, जिनके मस्तक में चंद्रकला सुशोभित है, जिनके केश पीले तथा उपर को उठे हुए हैं और जिनके दांत बहुत ही भयंकर तथा असित रंग के हैं, वे मेरा कल्याण करें।

मूल मंत्र

‘‘ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यंगिरे मां रक्ष-रक्ष मम शत्रून् भंजय-भंजय फे हुं फट् स्वाहा।’’

मंत्र-विधान

विनियोगः- अपने दायें हाथ में जल लेकर निम्नलिखित विनियोग पढ़ें :-

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9410030994
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.net, www.yogeshwaranand.org

ॐ अस्य श्री विपरीत-प्रत्यंगिरा मंत्रस्य भैरव-ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, श्री विपरीत प्रत्यंगिरा देवता, ममाभिष्ट सिद्धयर्थे जपे पाठे च विनियोगः।

विनियोग पढ़कर हाथ में लिया हुआ जल भूमि पर छोड़ दें। इसके बाद न्यास करें, यथा-

करन्यासः

ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः - बोलकर अपने दोनों अगूंठों का स्पर्श करें।

ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः - बोलकर दोनों अंगूठों से तर्जनी उंगली का स्पर्श करें (Touch First Finger)

ॐ श्री मध्यमाभ्यां नमः- मध्यमां उंगली को छुएं (Touch Middle Finger)

ॐ प्रत्यंगिरे अनामिकाभ्यां नमः- अनामिका उंगली को छुएं (Ring Finger)

ॐ मां रक्ष-रक्ष कनिष्ठिकाभ्यां नमः- सबसे छोटी उंगली को छुएं (Touch Little Finger)

ॐ मम शत्रून भंजय-भंजय करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः - सबसे पहले दोनों हाथों की हथेलियों को आपस में मिलाएं फिर उनके पिछले भागों का स्पर्श करें।

इसी प्रकार हृदय आदि न्यास करें-

ॐ ऐं हृदयाय नमः - हृदय का स्पर्श करें

ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा - सिर का स्पर्श करें

ॐ श्री शिखायै वषट् - शिखा का स्पर्श करें

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9410030994
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.net, www.yogeshwaranand.org

ॐ प्रत्यंगिरे कवचाय हुं - एक साथ बायें हाथ से दायें कंधें का एवं दायें हाथ से बायें कंधें स्पर्श करें
ॐ मां रक्ष-रक्ष नेत्र-त्रयाय वौषट् - नेत्रों का स्पर्श करें
ॐ मम शत्रून भंजय-भंजय अस्त्राय फट् - दाहिने हाथ की तर्जनी और मध्यमा उंगली से बायें हाथ की हथेली पर तीन बार ताली बजायें

दिग्बंधनः- ॐ भूर्भुव स्वः मंत्र से अपनी देह की रक्षा हेतु दिशाओं का बंधन करना होता है। मंत्र पढ़ते हुए दशों दिशाओं में चुटकी बजांए।

इसके उपरान्त भगवती प्रत्यंगिरा के मूल मंत्र का जप करें -

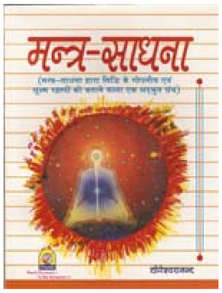
मूल मंत्र

''ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यंगिरे मां रक्ष-रक्ष मम शत्रून् भंजय-भंजय फे हुं फट् स्वाहा।''

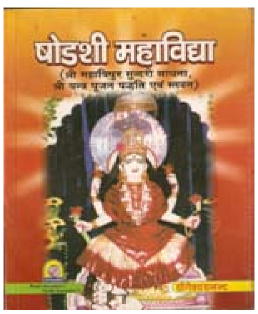
अपने गुरू देव से इस मंत्र की दीक्षा प्राप्त करें एव उसके पश्चात जप प्रारम्भ करें ।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9410030994
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.net, www.yogeshwaranand.org

2. **Mantra Sadhana**



3. **Shodashi Mahavidya** (Tripursundari Sadhana)



4. Shri Baglamukhi Sadhana Rahasya

Shri Baglamukhi Sadhana Rahasya is the upcoming book of my father and my guru Shri Yogeshwaranand Ji on Ma Baglamukhi. Only limited copies of this book are going to be published. If you want to secure your copy before all sold out please make a payment of Rs 680 into the below A/C
Sumit Girdharwal
Axis Bank
912020029471298
IFSC Code – UTIB0001094
After payment send your complete address and payment receipt to shaktisadhna@yahoo.com & sumitgirdharwal@yahoo.com. For more details please call on +91-9540674788, 91-9410030994

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9410030994
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.net, www.yogeshwaranand.org

Feedback & Support

I am very pleased to say that we are taking a next step ahead in the field of spirituality by digitalizing all the available Sanskrit texts in the world related to secret mantras, tantras and yantras. In the first phase we will digitalize all the content provided by Shri Yogeshwaranand Ji regarding das mahavidyas. We will not only make it available for Hindi and Sanskrit readers but also translate it into English so that whole world can get the benefits from our work. I can't do it alone. I request all of you to help me achieve this goal.

Requirement

1. We need a person who can write articles in Hindi and Sanskrit in software like Adobe Indesign (Preferable font chanakya) or Microsoft Office (Font Used Kruti Dev 020, Chanakya)
2. We need a graphic designer who can create good pictures to summarize the content.
3. We need an English translator who can translate these articles into English
4. Any donation will be appreciated which is highly needed for this project.

My dear readers! Very soon We are going to start an E-mail based monthly magazine related to tantras, mantras and yantras including practical uses for human welfare. I request you to appreciate me, so that I can change my dreams into reality regarding the service of humanity through blessings of our saints and through the grace of Ma Pitambara. Please make registered to yourself and your friends. For registration email me at sumitgirdharwal@yahoo.com Thanks

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9410030994
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.net, www.yogeshwaranand.org